

उपरोक्त शब्दों का अर्थ की विवेचना :-

उपरोक्त शब्दों का अर्थ की विवेचना में गहरी रुचि थी। अमेरिकी राष्ट्रपति विलियम के पहले वह कई पक्षों पर आलीन हो चुका था। जब वह 1932 ई. में अमेरिका का राष्ट्रपति बना। उस समय तक लैटिन अमेरिका के प्रति अमेरिका का एक अलग नीति ग्रहण करने की प्रवृत्ति पैदा हो चुका था। राष्ट्रपति विलियम के अमेरिका के विदेश नीति में अचानक परिवर्तन आने लगा। अमेरिका विश्व की समस्याओं में विचलित दिखाने लगा। अमेरिका की चाह थी कि अमेरिका एक समस्त अमेरिकी राष्ट्र के रूप में अमेरिकी राष्ट्रपति पर उभर कर प्रभुत्व हो। जहाँ वह विश्व के सभी देशों के साथ सम्पर्क राष्ट्र के रूप में कार्य करना चाहता था।

उपरोक्त शब्दों में 1902 ई. में कांफ्रेंस के संवोधित करने हुए कहा था "एक राष्ट्र के रूप में हमलोगों ने विश्व में बड़ी अफिरा बिनाई है, और सभी संश्लेष की ओर भी अधिक विस्तार करने के लिए हमलोग अफिराई हैं। अमेरिकी राष्ट्रों के मध्य हमारा स्थान अफिरा होना चाहिए। हमें प्रयत्न अवश्य करना है। यह सफल मिलेगा अवश्य।"

उपरोक्त शब्दों के अर्थ में मोरीशान एवं कोमेरा ने लिखा है कि "इतिहास में पहली बार अमेरिका का एक ऐसा राष्ट्रपति मिला है, जिसने अमेरिका के शासकत्व में से ही एक समस्त देशों की ओर अफिराई से उनका स्थान कर सकता था।" उपरोक्त शब्दों के राष्ट्रपति काल में अमेरिका की विदेश नीति में एक नया अन्वय-प्रारम्भ हो गया था, लेकिन कुछ अमेरिकन इस नई व्यवस्था के विरोधी थे। वे प्रत्यक्षवाद की नीति में विश्वास करते थे। उनका मत था कि यह नीति अमेरिका के कुछ मंत्रियों और राष्ट्रपति की अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षों का परिणाम था, लेकिन अमेरिका इस ओर लौट नहीं आये और अपनी नीति का अनुसरण करने हुए विदेश नीति पर कायम रहा।

उपरोक्त शब्दों की विवेचना की विवेचना के अन्त में प्रथम बार लिपि में कहा था "अमेरिका के अफिरा की वजह से अमेरिका अमेरिका की विदेश नीति थी।" इसके अन्त में अमेरिका नहीं था।

उपरोक्त शब्दों की विवेचना की विवेचना का अन्वय निम्न अर्थों के अन्वय पर किया जा सकता है :-

① उपरोक्त के साथ संश्लेष :- राष्ट्रपति का अर्थ निम्न अर्थों के अन्वय में अफिरा करने में सफल रही।

अब कोई नही आता था कि आगे वाले समय में अमेरिका और इंग्लैंड विश्व की दो महान शक्तियाँ बनकर उभरेंगे। दोनों राष्ट्र अपनी आपसी विवादों को मिलाकर मैत्रीभाव संबंधों की भावना से उभरने का मार्ग प्रशस्त किया और साथे बहने लगा।
 इन दोनों राष्ट्रों के मध्य सहयोग व मैत्रीभाव के निम्न कारण उत्पन्न हुए:-
 (क) एशिया में मुक्त द्वार मार्ग के प्रति गर्मनी का सिद्धांत।
 (ख) अमेरिकी राष्ट्रिय राजित्त में गर्मनी की आकांक्षाएँ।
 (ग) गर्मनी की सखी हुई लॉर्ड शक्ति से ब्रिटेन की फार पेंस होना।
 (घ) दोनों राष्ट्रों का अंगल भाषा एवं प्रशासन का आकार होना।
 (ङ) अफ्रीका में साम्राज्य विस्तार की भावना।
 (च) गर्मनी के तैयार मिलियन द्वितीय की उग्र राष्ट्रीयता तथा यूरोप, अफ्रीका, वैश्वपट्टा एवं लेटिन अमेरिका में प्रेक्षणीय महत्वाकांक्षा।

इन उपरोक्त कारणों के आधार पर दोनों राष्ट्रों के मध्य आपसी सहयोग व मैत्री भावना विकसित हो चुकी थी। ब्रिटेन ने भी अपनी स्वर्णिम कलगाव की नीति का परिष्कार कर दिया था। दोनों राष्ट्र पूर्वी एशिया, कैरीबियन द्वीप समूह, अटलांटिक और प्रशांत महासागरों पर एक दूसरे की नीति से सहमत हो गये थे।

(2) वेनेजुएला संघर्ष का समाधान:- वेनेजुएला दक्षिणी अमेरिका के उत्तर में एक राज्य था जिसने इरानी, गर्मनी, इंग्लैंड ने अपने आर्थिक स्वार्थों को सिद्ध करने के लिए सेनाओं स्थापित कर दी थी। जब अमेरिका की जनता की माँग पर राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने इस समस्या का समाधान करने की कोशिश की तो दोनों राष्ट्रों ने स्वयं अपनी सेनाओं द्वारा ली आज मुक्त स्थिति के रूजवेल्ट-उपनिर्वाह के रूप में जाने जाना है। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने 1905 ई में वहाँ एक कलम कलेक्टर को नियुक्त कर दिया इस प्रकार छोड़ रूजवेल्ट की सूझ-बूझ से वेनेजुएला की समस्या का समाधान हो गया।

(3) पनामा नहर संबंधी समस्या का समाधान:- अमेरिकी लोग नहर के बाढ़ अमेरिकी साम्राज्य अटलांटिक और प्रशांत महासागर दोनों देशों में स्थापित हो गमा बन इस नहर दोनों को सुनिश्चित रखने के लिए उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के बीच एक नहर का निर्माण आवश्यक समझा गया यह नहर पनामा में बनायी जानी थी। उस समय पनामा कोलम्बिया राज्य के अधीन था। एक फ्रांसीसी कम्पनी द्वारा नहर का निर्माण शुरू हो गया, लेकिन धन अभाव के कारण कार्य को बीच में ही बौकल पड़ा। अब अमेरिकी सरकार ने चार करोड़ डॉलर में खरीद लिया अमेरिका का नहर बनाने के पीछे अपना ही था।

अमेरिका ने गहर निर्णय के लिए 1901 ई में डोलोर्स के साथ एक संधि की जो है-पासपोर्ट के नाम से प्रसिद्ध है। इस संधि के द्वारा डोलोर्स ने अमेरिका को गहर बनाने के सभी अधिकार दे दिये तथा जोर देती कि शालिकान में गहर का उद्योग सभी देशों के लिए मान्य होगा।

संधि की मुख्य शर्तें थी:-

(क) गहर लगाना के अधिकार पर सभी देशों के व्यापारिक और युद्ध पोतों के लिये निःशुल्क रखा जायेगा।

(ख) इस गहर में आवागमन और माई इत्यादि की शर्तों के बारे में किसी देश के साथ कोई मैदान-मार्ग नहीं किया जायेगा। अमेरिकी पनामा संधि के बाद अत्युन्नत गहर निर्माण का काम शुरू हो गया। 1904 से 1914 ई तक यह गहर बनकर तैयार हो गयी। इस प्रकार कनवेल ने पूरा-पूरा नयी नीति से पनामा गहर संबंधी विवाद का समाधान कर दिया।

(4) अमेरिका-जापान संबंध:- यूरोप में दारि-दारि जापान अपना दब-दबा बन रहा था वह एक शक्तिशाली देश के रूप में उभर कर आ रहा था। मंचूरिया को जीतने के लिए 1904-1905 ई में रूस-जापान का युद्ध शुरू हो गया। अमेरिकी राष्ट्रपति कनवेल ने अपनी सरकार की नीति का अनुसरण किया लेकिन अचानक रूप से जापान के साथ धारा युद्ध की समाप्ति के लिए कनवेल ने रूस की जापान मंचूरिया से अपनी अधिकार को समाप्त नहीं करेगा तथा सुलेदार की नीति का पालन नहीं करेगा। अब तक युद्ध को अमेरिका रोकने का प्रयास नहीं करेगा किन्तु जापान अमेरिकी शर्तों को मानकर अमेरिका के साथ ही संधि कर लेगी। - (1) जापान का व्यापार कोरिया पर और मंगोलिया से होगा। (2) जापान ने कल के साउथ मंचूरिया रेल लाइन को ले लिया। कनवेल को विश्व शांति स्थापित करने के लिए 1906 ई में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया जो अमेरिका के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी।

(5) मोरक्को विवाद:- 1905-1906 ई में मोरक्को पर अफ्रीका को लेकर फ्रांस तथा जर्मनी में युद्ध की संभावना पनपने लगी परंतु कनवेल ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए इस खतरनाक का समाधान कर दिया कि युद्ध की आश में चलने से बचाया। इस प्रकार कनवेल के शासनकाल में अमेरिकी राष्ट्र में एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में अमका आभा/इसका प्रभाव और सम्बल को ही माना है क्योंकि कनवेल को विदेश नीति के कारण ही पराजित हुआ। अब कनवेल की विदेश नीति प्रगतिशील नीति थी।